मेरे घर भगवान है आया।
कहता मै तुमको हु लेने आया।
माया ने है तुमको बहुत सताया।
पर गयी है उसकी तुमपर पर्छाया।
देने आया मै तुमको अपनी अब छत्रछाया।
विकारी राहु का परा तुम पर हे साया।
ब्रहस्पति की देने आया मै तुमको सुख की छाया।
बनना है तुमको अब देह भान से न्यारा।
यह देह है मिटी की काया।
इसको है इस मिटी में ही मिल जाना।
बनो तुम अब पवित्र निर्मल।
शीतल निश्छल और प्रेम मूर्त।
ज्ञान दर्पण मे तुम देखो अपनी सूरत।
माया ने तुमको है कुरूप बनाया।
बनाने मे तुमको अब खुबसूरत आया।
पुरानी दु निया से ममत्व मिटाओ।
नयी दुनिया मे मन बुद्धि को लगाओ।
मन्मनाभव का मंत्र तुम गाओ।
मद्ध्याजीव बन तुम जाओ।
इसके छू मंत्र से तुम माया को भगाओ।
फिर पावन बन कर मेरे पास आ जाओ।
दूंगा मै तुम्हे फिर सुंदर कंचन काया।
रहना उसमे निरोगी बन कर दो युगों तक।

कर लो पुरुषार्थ स्वर्ग में ऊंच पद पाने का।